(च) अन्वयः - वरतन्तुशिष्यः, अर्घ्यपात्रानुमितव्ययस्य अपि रघोः

इति उदारम् गाम् निशम्य स्वार्थोपपत्तिम् प्रति दुर्बलाशः

तम इति अवोचत्,

अनुवाद - वरतन्तु के शिष्य (कौत्स) ने, मिट्टी से बने अर्घ्यपात्र से ही जिसके सम्पूर्ण धन के व्यय हो जाने का पता लगता है, ऐसे (उस) रघु की यह उदार होती ~~है~~ हुई भी वाणी को सुनकर, अपने प्रयोजन (कार्य) की सिद्धि के प्रति निराश होते हुए या शिथिलमनोरथ होते हुए उस से ऐसा कहा।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(छ) अन्वयः - राजन्! सर्वत्र नः वार्तम् अवेहि, त्वयि नाथे प्रजानाम् कुतः अशुभम्? सूर्ये तपति लोकस्य दृष्टेः आवरणाय तमिस्रा कथम् कल्पेत।

अनुवाद - कौत्स कहता है- हे राजन्, (आप) सब जगह पर हमारी कुशलता या नीरोगता जानो, तुम्हारे स्वामी होने पर प्रजा का कहाँ अमंगल हो सकता है! सूर्य के प्रकाशमान होने पर लोगों की दृष्टि को ढकने के लिए अन्धकारसमूह कैसे पर्याप्त होगा अर्थात् समर्थ नहीं होगी, जैसे सूर्य के रहते हुए अँधेरा नहीं ठहर पाता, वैसे ही आप के राजा बने रहते प्रजा में दुख का नाम नहीं है।

(ज) अन्वयः - नरेन्द्र! आरण्यकोपात्तफलप्रसूतिः स्तम्बेन अवशिष्टः नीवारः इव (त्वम्) तीर्थप्रतिपादितर्द्धिः शरीरमात्रेण तिष्ठन् आभासि।

P.T.O.

अनुवाद – हे राजन्! अरण्य में निवास करने वाले मुनिजन आदि द्वारा जिसके दाने झाड़े लिये गये हों डण्ठल से बचे हुए ऐसे नीवार की भाँति (आप) सत्पात्रों को सारी सम्पत्ति दान करने वाले केवल शरीर से लहरते हुए सुशोभित हो रहे हैं। अर्थात् जिसप्रकार वनवासी मुनियों द्वारा दाने झाड़ लिये लिये जाने पर केवल डण्ठल से बचा हुआ नीवार (धान्य) ही मिलता है, उसी प्रकार आप भी अपनी सारी सम्पत्ति सत्पात्रों को दानकर केवल शरीरमात्र से रह गये हैं।

(ङ) अन्वयः – तात अन्वयः अहं तावत् अनन्यकार्यः गुर्वर्थम् यतिष्ये, चातकः अपि निर्गलित-अम्बुगर्भम् शरद्घनम् न अर्दति, ते स्वस्ति अस्तु।

अनुवाद – कौत्स कहता है – जिसे निर्दिष्ट उद्देश्य के अतिरिक्त अन्य कार्य न हो ऐसा मैं तो अब अन्य किसी से बड़े (कार्य) के लिए ग्रहण करने के लिए प्रयत्न करूँगा। पपीहा भी, उस शरत्कालिक बादल से याचना नहीं करता, जिसके गर्भ से जल निकल चुका हो। तुम्हारा कल्याण हो।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(अ) अन्वयः - स्तावत् उक्त्वा, प्रतियातुकामम्, महर्षेः शिष्यम् तम्
नृपतिः निषिध्य अन्वयुङ्क्त विद्वन्! त्वयाः गुरवे किम्
कियत् वा वस्तु प्रदेयम् इति।

अनुवाद - ऐसा कहकर, लौट जाने की इच्छा वाले महर्षि के शिष्य, उस कौत्स को राजा (रघु) ने रोककर पूछा - 'हे विद्वान् कौत्स! आपको (अपने) गुरु को क्या और कितनी वस्तु देनी है कुछ कहिए भी तो)।

Scanned with CamScanner